

भाई दूज त्योहार का अर्थ, इतिहास एवं महत्वपूर्ण तथ्य

[S samanyagyan.com/hindi/gk-bhai-dooj-festival](http://samanyagyan.com/hindi/gk-bhai-dooj-festival)

भाई दूज 2021 में कब है

हिंदू धर्म में भाई दूज का विशेष महत्व होता है। यह भाई-बहन के बीच स्नेह के बंधन को मजबूत करता है। हिंदू पंचांग के अनुसार, फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की द्वितीया को भाई दूज का त्योहार मनाया जाता है। भाई दूज को भ्रातृ द्वितीया के नाम से भी जाना जाता है। कुछ क्षेत्रों में होली भाई दूज काफी लोकप्रिय है, लेकिन यह त्योहार ज्यादा प्रसिद्ध नहीं है। इस साल होली भाई दूज 30 मार्च 2021 (मंगलवार) को है।

भाई दूज शुभ मुहूर्त-

द्वितीया तिथि प्रारम्भ – नवंबर 06, 2021 को 08:54 PM बजे

द्वितीया तिथि समाप्त – नवंबर 09, 2021 को 05:27 PM बजे

भाई दूज – प्रस्तावना:

भाई दूज या भ्रातृ द्वितीया कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाने वाला हिन्दू धर्म का पर्व है जिसे यम द्वितीया भी कहा जाता है। भाई दूज दीपावली के तीन दिन बाद आने वाला ऐसा पर्व है, जो भाई के प्रति बहन के स्नेह को अभिव्यक्त करता है एवं बहनों अपने भाई की खुशहाली के लिए कामना करती हैं। यह पर्व बड़ी श्रद्धा और परस्पर प्रेम के साथ मनाया जाता है। रक्षाबंधन के बाद, भाईदूज ऐसा दूसरा त्योहार है, जो भाई बहन के अगाध प्रेम को समर्पित है। इस वर्ष पर्व यह 16 नवम्बर को है।

भाई दूज पर्व की पौराणिक मान्यता:

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को पूर्व काल में यमुना ने यमराज को अपने घर पर सत्कारपूर्वक भोजन कराया था। उस दिन नारकी जीवों (नरक गति में रहने वाले जीव नारकी कहलाते हैं) को व्यथा से छुटकारा मिला और उन्हें संतुष्ट किया गया था। वे पाप से मुक्त होकर सब बंधनों से छुटकारा पा गये और उन सब ने मिलकर एक महान् उत्सव मनाया जो यमलोक के राज्य को सुख पहुंचाने वाला था। इसीलिए यह तिथि तीनों लोकों में यम द्वितीया के नाम से विख्यात हुई थी। जिस तिथि को यमुना ने यम को अपने घर भोजन कराया था, उस तिथि के दिन जो मनुष्य अपनी बहन के हाथ का उत्तम भोजन करता है उसे उत्तम भोजन के साथ धन की प्राप्ति भी होती रहती है। पद्म पुराण में कहा गया है कि कार्तिक शुक्लपक्ष की द्वितीया को पूरव्हिन में यम की पूजा करके यमुना में स्नान करने वाला मनुष्य यमलोक को नहीं देखता अर्थात् उसको मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

भाई दूज पर्व से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य:

1. भारत के पूरे उत्तरी भाग में भाई दूज, दिवाली त्योहार के दौरान मनाया जाता है। यह विक्रमी संवत् नव वर्ष का दूसरा दिन भी है, जो उत्तरी भारत में मनाया जाता है, जो कि कृतिका के चंद्र माह से शुरू होता है। यह व्यापक रूप से उत्तर प्रदेश में अवधियों द्वारा मनाया जाता है, बिहार में मैथिलों के रूप में भारदुतिया और विभिन्न अन्य जातीय समूहों के लोग हैं। इस नव वर्ष के पहले दिन को गोवर्धन पूजा के रूप में मनाया जाता है।
2. हिंदू पौराणिक कथाओं में एक लोकप्रिय कथा के अनुसार, दुष्ट राक्षस नरकासुर का वध करने के बाद, भगवान कृष्ण ने अपनी बहन सुभद्रा का दौरा किया, जिन्होंने उन्हें मिठाई और फूलों के साथ गर्मजोशी से स्वागत किया। उसने कृष्ण के माथे पर स्नेहपूर्वक तिलक भी लगाया। कुछ लोग इसे त्योहार का मूल मानते हैं।
3. नेपाल में भितिका को भाइयों के भितिहर अर्थात् तिहार, जहाँ दशीन (विजयादशमी / दशहरा) के बाद यह सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। तिहार त्योहार के पांचवें दिन मनाया जाता है, यह खासा लोगों द्वारा व्यापक रूप से मनाया जाता है।
4. बंगाल में यह पर्व भाई फोंटा के नाम से विख्यात है, और यह हर साल काली पूजा के बाद दूसरे दिन होता है।
5. महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात और कर्नाटक राज्यों में मराठी, गुजराती और कोंकणी भाषी समुदायों के बीच भाई दूज पर्व को भाऊबीज के नाम से जाना जाता है।
6. अन्य नामों में भाई दूज को आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में भतरु द्वितीया, या भतेरी दित्या या भगिनी हस्त भोजानमू जैसे नाम शामिल हैं।
7. इसके अलावा कायस्थ समाज में इसी दिन अपने आराध्य देव चित्रगुप्त की पूजा की जाती है। कायस्थ लोग स्वर्ग में धर्मराज का लेखा-जोखा रखने वाले चित्रगुप्त का पूजन सामूहिक रूप से तस्वीरों अथवा मूर्तियों के माध्यम से करते हैं। वे इस दिन कारोबारी बहीखातों की पूजा भी करते हैं।
8. राहेल फेल मैकडरमोट, कोलंबिया विश्वविद्यालय में एशियाई अध्ययन के प्रोफेसर, रवींद्रनाथ टैगोर की राखी-बंधन समारोह का वर्णन करते हैं, जो भाई दूज अनुष्ठान से प्रेरित थे, जो बंगाल के 1905 के विभाजन का विरोध करने के लिए आयोजित किए गए थे।